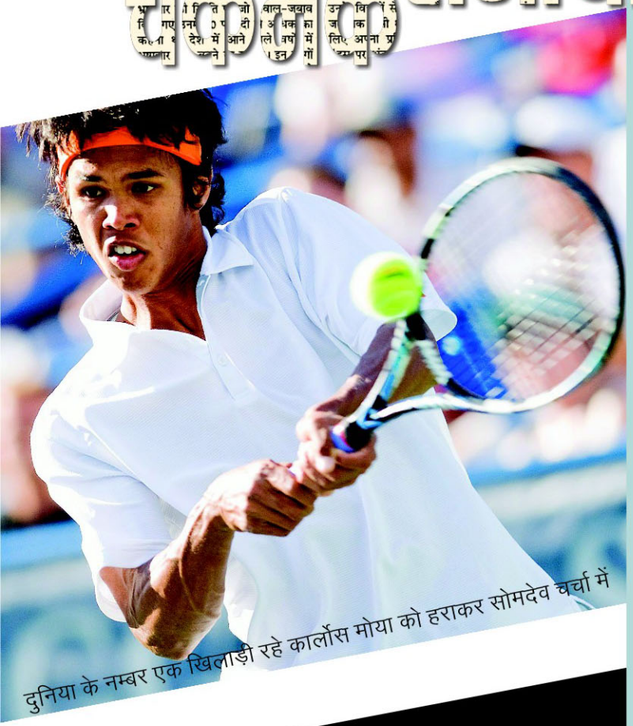

चकमक समाचार

दुनिया के नम्बर एक खिलाड़ी रहे कार्लोस मोया को हराकर सोमदेव चर्चा में

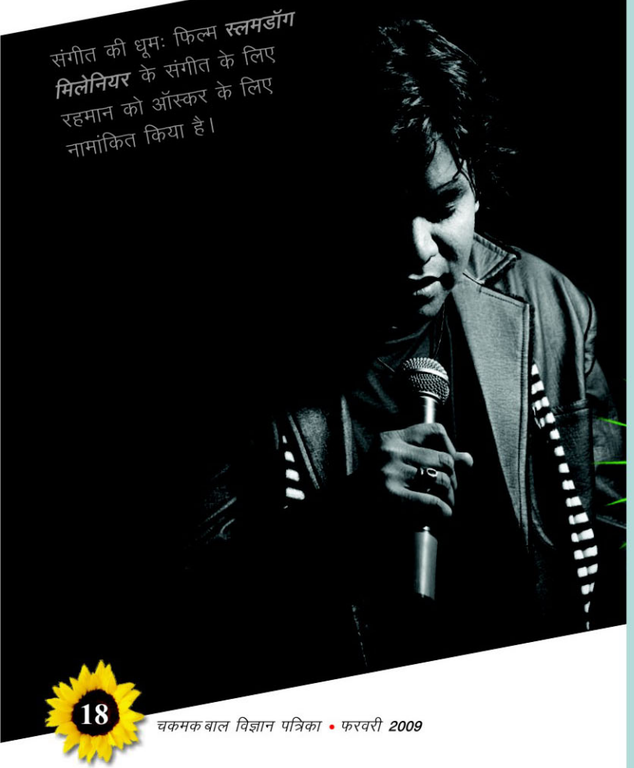

संगीत की धूमः फिल्म ***स्लमडॉग मिलेनियर*** के संगीत के लिए रहमान को ऑस्कर के लिए नामांकित किया है।

इडली राजा...

सरथ की माँ ने अपने बच्चों को इडली बेच-बेच कर पाला। जब सरथ बड़ा हुआ तो अपने भाई-बहनों के साथ वो भी उस झुग्गी में इडली बाँटने लगा जहाँ वे रहते थे। सरथ कुछ पैसे बचाता भी रहता। पढ़ना उसे अच्छा लगता। स्कूल से आगे की के लिए उसने लोगों से रुपए उधार लिए। कुछ मदद उसकी बहन ने भी की। पहली तनख्वाह से ही उसने सारे कर्ज़े चुका दिए। फिर आईआईएम अहमदाबाद से एमबीए की डिग्री ली। और एक बार फिर इडली बेचने लगा - अपनी कम्पनी फुडकिंग के ज़रिए। 2006 में उसने इडली का कारोबार अपने 2000 रुपए और कुछ उधार से शुरू किया। आज उसका महीने का टर्नओवर 32 लाख रुपए है। पेश है उनके इंटरव्यू के कुछ अंश...

किसी बड़ी कम्पनी में काम करने की बजाय अपना खुद का कारोबार करने का तुमने कैसे सोचा?

मेरे अन्दर एक ज़बर्दस्त इच्छा है कुछ ऐसा करने की जिससे समाज के वंचित लोगों को रोज़गार मिले। आज लगभग 200 लोग मेरी कम्पनी फूडकिंग में काम कर रहे हैं।

आपको इस स्थिति में पहुँचने में कितना वक्त लगा?

लगभग डेढ़ साल। यह शुरुआती समय सबसे मुश्किल था। मैंने अपने नुकसानों से सीखा। आत्मविश्वास के बूते मैं आगे बढ़ता गया।

आपको अपना कारोबार शुरू करने और आगे बढ़ाने में एमबीए की डिग्री से कितनी मदद मिली?

इससे मुझे कारोबार शुरू करने और उसको फैलाने का ढंग पता चला। इसने मुझे अपनी गलतियों से सीखने और उन्हें सही करने का सलीका भी दिया - वो भी इतने कम समय में...।

क्या आप अपने काम से सन्तुष्ट हैं? आगे की क्या योजना है?

मैं अपनी कम्पनी के कामकाज और तरक्की से काफी खुश हूँ। मैं ध्यान रखता हूँ कि मेरे यहाँ काम करने वालों और उनके परिवारों का ख्याल रखा जाए। मेरे एक कर्मचारी की माँ ने मुझसे कहा कि अब वह आराम से मर सकती है क्योंकि अब कम्पनी मेरे बेटे का ख्याल रखने के लिए है। मैं अपनी कम्पनी को भारत की पहली 100 कम्पनियों में देखना चाहता हूँ।

वो लोग जो अपना कारोबार करना चाहते हैं उनके लिए कुछ....

मैं उनसे कहूँगा कि वे छोटे पैमाने से शुरू करें और बाद में उसे फैलाएँ।

17 दिसम्बर, हिन्दुस्तान टाइम्स

भले ही भारत-पाकिस्तान के आपसी रिश्तों पर बर्फ जम रही है लेकिन दोनों देशों के आम लोगों के आपसी सम्बन्धों में गर्माहट अब भी बरकरार है। उनका मिलना-जुलना अब भी जारी है। "मेरे ससुर को लकवा हो गया था। हमें बैंगलोर जाने का वीज़ा चाहिए।" कराची से आफताब टेक्नॉलॉजीज़ प्राइवेट लिमिटेड के प्रबन्ध निदेशक अफज़ल खान ने बताया। अफज़ल ने समय बचाने के लिए सारी रिपोर्ट ई-मेल से डॉक्टरों को भेज दीं। बैंगलोर के नारायण हृदयालय अस्पताल के डॉक्टरों ने समय बचाने के लिए भेजी गई रिपोर्टों के आधार पर काम करना शुरू कर दिया है।

दिल्ली का एस्कॉर्ट हार्ट अस्पताल हर हफ्ते लगभग दो पाकिस्तानी हृदय रोगियों का ऑपरेशन करता है। "डॉक्टर और रोगी का रिश्ता इंसानियत पर टिका है। पाकिस्तानी लोग हमारे पास उम्मीदें लेकर आते हैं और हम उनका स्वागत करते हैं।" यह कहना है इस अस्पताल के डॉ. अशोक सेठ का।

अस्पताल की चौथी मंज़िल में लाहौर के सैयद आदिल मसूद अपने दो महीने के बेटे अब्दुल्ला को गोद में खिलाते हुए कहते हैं, "भारत के डॉक्टरों ने मेरे बेटे को दूसरी ज़िन्दगी दी है। यह मेरा भी देश है।"

शाम के धुँधलके में एक सफेद बस दिल्ली के अम्बेडकर बस अड्डे में पहुँचती है। उस पर पाकिस्तान पर्यटन विकास निगम का लोगो लगा है।शादी से पहले मैं लाहौर में रहती थी। अब दिल्ली में हूँ। मुझे अपनी भतीजी की शादी में पाकिस्तान जाना है। मेरी बेटी पहली बार पाकिस्तान जाएगी। वो काफी खुश है। दिलशाद बाग की अमीना अहमद का कहना है।

हफ्ते में दो दिन समझौता एक्सप्रेस रेलगाड़ी भी पाकिस्तान आती-जाती है। दिल्ली परिवहन निगम की बस हफ्ते में छह दिन दिल्ली से लाहौर आती-जाती है। इसमें एक व्यक्ति का किराया है 1500 रु।

सुबह छह बजे दिल्ली से निकली यह बस पंजाब के हरियाली से अटे खेतों के बीच से गुज़रती हुई पाकिस्तान पहुँचती है।

काश! ऐसी ही हरियाली दोनों देशों के रिश्तों में भी बने रहे...

18 दिसम्बर, हिन्दुस्तान टाइम्स

और चलते-चलते...

पिछले दिनों भोपाल के राष्ट्रीय वन उद्यान वन विहार ने पशुओं को गोद देने की एक योजना की घोषणा की। इसके तहत लोग सिंह, बाघ, तेन्दुआ, भालू सहित 11 वन्य प्राणी सशुल्क गोद ले सकते हैं। खबर पढ़ते ही सबसे पहले आगे आईं अभिनिता दास। अभिनिता ने अपनी पहली कमाई एक अजगर को गोद लेने में लगाई है। अजगर गोद लेने का मासिक खर्च है 720 रु।

नव दुनिया, 2 जनवरी 2009

फोटोः प्रवीण दीक्षित